टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे

एम. ए. हिंदी, प्रथम वर्ष (भाग–१)

मई २०१० परीक्षा

विषय : भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्यशास्त्र एवं आलोचना (H-103)

दिनांक : २०/५/२०१० **कुलअंक : १००** **समय : प्रात: १०.०० से दो. १.००**

सुचनाएँ : १. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

२. सभी प्रश्नों के लिए समान अंक हैं ।

प्रश्न १. अ) पाश्चात्य साहित्यशास्त्र (काव्य शास्त्र) के विकास क्रम का संक्षिप्त परिचय दीजिए । **(२०)**

अथवा

ब) रससिध्दांत के अंतर्गत विविध भारतीय विचारकों की रस संबंधी धारणाओं को स्पष्ट कीजिए ।

प्रश्न २. अ) 'अलंकार' की विविध परिभाषाओं को स्पष्ट करते हुए काव्य में अलंकारों के महत्त्व को विशद कीजिए। **(२०)**

अथवा

ब) भारतीय साहित्यशास्त्र(काव्यशास्त्र) में प्रतिपादित ध्वनि सिध्दांत के महत्त्व को स्पष्ट किजिए।

प्रश्न ३. अ) यथार्थवाद को सविस्तार स्पष्ट करते हुए यथार्थवाद और आदर्शवाद में जो भेद हैं उनपर प्रकाश डालिए। **(२०)**

अथवा

ब) संप्रेषण सिध्दांत के स्वरूप और महत्त्व को स्पष्ट करते हुए उसमें रिचर्ड्स् के योगदान को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ४. अ) भारतीय आचार्यों के अनुसार 'औचित्य' से तात्पर्य क्या है? औचित्य –विचार के संदर्भ में विविध आचार्यों के मत स्पष्ट कीजिए। **(२०)**

अथवा

ब) आलोचक के गुण बताते हुए आलोचना के प्रमुख प्रकारों का स्वरुप एवं महत्त्व स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ५. किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए। **(२०)**

१) विरेचन सिद्धांत ।
२) क्रोचे की कलाविषयक धारणा।
३) रीति और शैली।
४) शब्द शक्ति के भेद।